Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-496-499

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 496-499
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

अतुल कुमार
(परास्नातक) इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

Corresponding Author :

अतुल कुमार
(परास्नातक) इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित स्त्री

सार : हिंदी साहित्य के नई कहानी आंदोलन में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं, बदलते पारिवारिक संबंधों और विशेष रूप से स्त्री-जीवन के विविध आयामों को अत्यंत संवेदनशीलता एवं यथार्थपरक दृष्टि से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में स्त्री केवल पारंपरिक त्याग, समर्पण और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व, आत्मसम्मान से युक्त, विचारशील और आत्मनिर्णय की आकांक्षी मनुष्य के रूप में उपस्थित होती है। मन्नू भंडारी की स्त्रियाँ अपने अस्तित्व, पहचान और मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए सामाजिक रुढ़ियों, पारिवारिक दबावों तथा पितृसत्ता से निरंतर संघर्ष करती हैं।

मुख्य शब्द : नई कहानी आंदोलन, स्त्री-अस्मिता, मध्यवर्गीय समाज, स्त्री-चेतना, आत्मनिर्णय, आत्मसम्मान, दाम्पत्य संबंधों की जटिलता, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, नारी-स्वतंत्रता तथा सामाजिक परिवर्तन।

परिचय : भारतीय साहित्य में महिला लेखकों ने हमेशा समाज की यथार्थ छवियों को उकेरने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें मन्नू भंडारी का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हिंदी साहित्य की अग्रणी कथा लेखिकाओं में से एक मन्नू भंडारी ने अपने कहानियों के माध्यम से न केवल महिलाओं की मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्थिति को प्रस्तुत किया है, बल्कि उनके भीतर जन्म ले रही नारी चेतना को भी उभारा है। भंडारी की कहानियाँ यथार्थपरक और संवेदनशीलता का उदाहरण हैं।उनके कहानी में महिला पात्र अक्सर परंपरागत सामाजिक सीमाओं और घरेलू दमन के बावजूद आत्म-साक्षात्कार और व्यक्तिगत पहचान की खोज में सक्रिय नजर आते हैं। मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य की प्रमुख कथाकार और उपन्यासकार हैं। उनका योगदान केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने समाज में नारी चेतना और सामाजिक यथार्थ को समझने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मन्नू भंडारी की 'घुटन', 'त्रिशंकु', 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'दीवार बच्चे और बरसात', 'रानी मा का चबूतरा', 'नई नौकरी', 'क्षय', 'यही सच है', 'ऊंचाई', 'एक बार और', 'ईसा के घर इंसान', 'मैं हार गई' और तीन निगाहों की एक तस्वीर' आदि जैसी कहानियाँ यथार्थवाद, संवेदनशीलता और सामाजिक विमर्श का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उनके पात्र घरेलू जीवन, विवाह, परिवार और समाज के दबावों के बीच अपनी पहचान की खोज करते हैं। मन्नू भंडारी की कहानियों में सबसे ज्यादा मध्यमवर्गीय जीवन का चित्रण मिलता है। उन्होंने घर-परिवार के छोटे-छोटे झगड़े, आर्थिक समस्याएँ, पति-पत्नी के रिश्तों में तनाव और मानसिक दूरी को बहुत ही सरल तरीके से दिखाया है।

'यही सच है' कहानी की पात्र की दीपा आधुनिक शिक्षित स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस रखती है। 'कील और कसक' कहानी की नायिका दाम्पत्य जीवन की उपेक्षा और मानसिक पीड़ा को अभिव्यक्त करती है, जबकि 'अकेली' की सोमा बुआ सामाजिक उपेक्षा और अकेलेपन की त्रासदी को झेल रही होती हैं। 'त्रिशंकु' में नई और पुरानी पीढ़ी के मूल्यों के बीच स्त्री की अस्मिता का संघर्ष दिखाई देता है। इस प्रकार मन्नू भंडारी की कहानियाँ स्त्री के बाह्य जीवन से अधिक उसके अंतर्मन, संवेदनाओं और आत्मसंघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। उन्होंने स्त्री को केवल करुणा, त्याग और सहनशीलता की पारंपरिक प्रतिमा के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, आत्मचेतस, निर्णयक्षम और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी स्त्री पात्र जीवन की परिस्थितियों से समझौता तो करती हैं, परंतु अपनी अस्मिता और आत्मसम्मान को बचाने का प्रयास भी करती हैं।

मन्नू भण्डारी की प्रसिद्ध कहानी 'यही सच है' आधुनिक स्त्री-चेतना का सशक्त उदाहरण है। इसकी नायिका दीपा अपने अतीत और वर्तमान के बीच खड़ी एक शिक्षित, आत्मनिर्भर और संवेदनशील युवती है। वह संजय और निशीथ के प्रति अपने भावनात्मक संबंधों को समझने का प्रयास करती है और अंततः अपने विवेक से निर्णय लेती है। दीपा का यह निर्णय कि वह अपने वर्तमान को अतीत की स्मृतियों पर बलिदान नहीं करेगी, स्त्री के आत्मनिर्णय और आत्मविश्वास का प्रतीक है। दीपा कहती है कि "विश्वास करो संजय, तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था।"[1] दीपा का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक स्त्री केवल भावनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र चेतना और अनुभवों के आधार पर जीवन का निर्णय लेने में सक्षम है। वह किसी सामाजिक दबाव के कारण नहीं, बल्कि अपनी आत्मस्वीकृति के आधार पर अपने भविष्य का चयन करती है।

अकेली' कहानी की सोमा बुआ भारतीय समाज में उपेक्षित वृद्ध स्त्री का प्रतिनिधित्व करती हैं। पति और पुत्र के अभाव में उनका जीवन अकेलेपन, उपेक्षा और भावनात्मक रिक्तता से भर जाता है।

बुढ़िया सोमा बुआ पिछले बीस वर्षों से अकेली रहती है। उनका एकलौता जवान बेटा असमय ही मर जाता है। इसके कारण पति तीर्थयात्रा पर निकल जाते है और सन्यासी बन जाते है। एक कोठारी का किराया आता है, उसी से जैसे-तैसे वह अपना गुजारा कर लेती है। सोमा बुआ के सन्यासी पति वर्षों में एक महीना घर आते हैं। अब उनको वह सुहाता नहीं। पति का स्नेहहीन व्यवहार और बुआ के प्रतिदिन के कार्य व्यवहारों पर पति द्वारा लगाया जाने वाला अंकुश उन्हें अच्छा नहीं लगता। बुआ पड़ोसियों के भरोसे अपने जीवन का निर्वाह करती है, दूसरे के सुख-दुख के कार्यों में सहायता करती है। जब पति घर पर होते है तब बुआ का अन्य घरों में आना-जाना बन्द हो जाता है। राधा को बुआ पति के नाराज होने की बात भी बताती है। राधा कहती है कि "अरे, रोती क्यों हो बुआ? कहना-सुनना तो चलता ही रहता है। सन्यासी जी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो और क्या? एक महीने के लिए सुन लिया करो और क्या?"[2] यह कहानी केवल एक स्त्री की व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की आलोचना भी है जहाँ वृद्ध महिलाओं की भावनाओं और अस्तित्व की उपेक्षा की जाती है।

सोमा बुआ का चरित्र भारतीय स्त्री के त्याग, सेवा और ममता का प्रतीक है। वे दूसरों के लिए जीती हैं, परंतु

जब उन्हें अपनेपन और सम्मान की आवश्यकता होती है, तब समाज उन्हें उपेक्षित कर देता है। कहानी का सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग वह है जब वे पड़ोस में होने वाले विवाह में निमंत्रण की प्रतीक्षा करती रहती हैं। उन्होंने विवाह की तैयारी में जितना बन सकता है सहयोग किया होता है, फिर भी उन्हें आमंत्रित नहीं किया जाता। यह घटना उनके अकेलेपन को और गहरा कर देती है। यहाँ लेखिका स्पष्ट करती हैं कि आधुनिक समाज में संबंधों का आधार आत्मीयता नहीं, बल्कि औपचारिकता और स्वार्थ है। सोमा बुआ परिवार और समाज से अपनापन चाहती हैं, किन्तु उनको नहीं मिलता है।

ऐसे ही दाम्पत्य जीवन की घुटन की कहानी है **'**कील और कसक' इसमें मन्नू भण्डारी ने दाम्पत्य संबंधों की आंतरिक विडंबनाओं को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। कहानी की नायिका प्रेम, सम्मान और भावनात्मक निकटता चाहती है, परन्तु पति की उपेक्षा उसे भीतर ही भीतर तोड़ देती है। यह कहानी स्पष्ट करती है कि स्त्री की पीड़ा केवल आर्थिक अभाव नहीं, बल्कि भावनात्मक उपेक्षा भी हो सकती है। कील और कसक ऐसी ही एक प्रतिनिधि कहानी है, जिसमें आधुनिक स्त्री के भावनात्मक अकेलेपन और उसके मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को अत्यंत कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। यह कहानी केवल एक स्त्री की निजी दुख की गाथा नहीं, बल्कि आधुनिक पारिवारिक संरचना में संबंधों के विघटन और संवेदनहीनता का गहन सामाजिक आख्यान है।

इसी क्रम में मन्नू भण्डारी की कहानी 'त्रिशंकु' आधुनिक भारतीय समाज में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच उत्पन्न वैचारिक संघर्ष का अत्यंत सशक्त और यथार्थपरक चित्रण करती है। यह कहानी केवल दो पीढ़ियों के मतभेदों की नहीं है, बल्कि संक्रमणकालीन समाज की उस मानसिक स्थिति की है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करना कठिन होता जा रहा है। इसमें माँ और बेटी के विचारों के माध्यम से बदलते सामाजिक मूल्यों का चित्रण किया गया है।यह कहानी दिखाती है कि नई पीढ़ी की स्त्री स्वतंत्रता चाहती है, जबकि पुरानी पीढ़ी परंपराओं को सुरक्षित रखना चाहती है। परिणामस्वरूप दोनों के बीच वैचारिक टकराव उत्पन्न होता है। कहानी की शुरुआत में लेखिका कहती है कि "घर की चहारदीवारी आदमी को सुरक्षा देती है, पर साथ ही उसे एक सीमा में बाँधती भी है। स्कूल-कॉलेज जहाँ व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास करते हैं, वहीं नियम-कायदे और अनुशासन के नाम पर उसके व्यक्तित्व को कुंठित भी करते हैं- बात यह है बंधु, कि हर बात का विरोध उसके भीतर ही रहता है"।[3] कहानी का एक और अंश देखिए-"ये सब मैं किसी किताब के उदाहरण नहीं पेश कर रही। ऐसी भारी-भरकम किताबें पढ़ने का तो मेरा बूता ही नहीं। वे तो उन बातों और बहसों के टुकड़े हैं जो रात-दिन हमारे घर में हुआ करती हैं। हमारा घर, यानी बुद्धिजीवियों का अखाड़ा। यहाँ सिगरेट के धूएँ और कॉफी के प्यालों के बीच बातों के बड़े-बड़े तुमार बाँधे जाते हैं. बड़ी-बड़ी शाब्दिक क्रान्तियों की जाती हैं। इस घर में काम कम और बातें ज्यादा होती हैं। मैंने कहीं पढ़ा तो नहीं, पर अपने घर से यह लगता जरूर है कि बुद्धिजीवियों के लिए काम करना शायद वर्जित है। मातुश्री अपनी तीन घण्टे की तफरीहनुमा नौकरी बजाने के बाद मुक्ता थोड़ा बहुत पढ़ने-लिखने के बाद जो समय बचता है वह या तो बात-बहस में जाता है या फिर लेट लगाने में। उनका ख्याल है कि शरीर के निष्क्रिय होते ही मन-मस्तिष्क सक्रिय हो उठते हैं और वे दिन के चौबीस घण्टों में से बारह घण्टे अपना मन-मस्तिष्क ही सक्रिय बनाए रखती हैं। पिताश्री और भी दो कदम आगे। उनका बस चले तो वे नहाएँ भी अपनी मेज पर ही"।[4] वास्तव में त्रिशंकु आधुनिक भारतीय स्त्री के अंतर्द्वंद्व, आत्मसंघर्ष और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज की कहानी है। मन्नू भंडारी यह स्थापित करती हैं कि स्त्री-मुक्ति केवल वैचारिकता से संभव नहीं है; इसके लिए परिवार, समाज और स्वयं स्त्री की मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है। इसलिए त्रिशंकु केवल पीढ़ियों के संघर्ष की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री-अस्मिता, आत्मनिर्णय और समानता की जटिलता की भी सशक्त उदाहरण है।

मन्नू भण्डारी की 'मैं हार गई' कहानी स्त्री के आत्मसम्मान और उसके आंतरिक संघर्ष है। इसमें स्त्री-चेतना को

सामाजिक और नैतिक चेतना के साथ जोड़ा गया है। कथावाचिका की हार वास्तव में उस समाज की हार है, जो ईमानदारी, आदर्श और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित नहीं रख सका। यह कहानी सिद्ध करती है कि आधुनिक स्त्री केवल भावनाओं की प्रतिनिधि नहीं, बल्कि विचार, विवेक और सामाजिक परिवर्तन की भी वाहक है। इस दृष्टि से 'मैं हार गई' स्त्री-अस्मिता, नैतिक संघर्ष और सामाजिक यथार्थ का एक सशक्त साहित्यिक दस्तावेज़ है। मैं हार गई की नायिका कहती है कि "अब तो इतनी हिम्मत नहीं रही कि एक बार फिर मध्यमवर्ग से अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजति देकर बहुत ही ईमानदारी से में कहती हूं कि मेरा रोम रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहता फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गयी बुरी तरह हार गयी"।[5] आज भी राजनीति, प्रशासन और सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का संकट दिखाई देता है। ऐसे समय में 'मैं हार गई' और अधिक प्रासंगिक जान पड़ती है। यह कहानी हमें याद दिलाती है कि स्त्री-चेतना केवल अधिकारों की माँग करना नहीं है, बल्कि नैतिकता, सत्य, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व की भी चेतना है।

इसी क्रम में एक 'प्लेट सैलाब कहानी' में महानगरीय जीवन की व्यस्तता, संवेदनहीनता और मानवीय संबंधों के विघटन को चित्रित किया गया है। यहाँ स्त्री भी उसी सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा है जहाँ रिश्ते सिर्फ नाम के लिए होते जा रहे हैं। 'स्त्री सुबोधिनी' पितृसत्तात्मक व्यवस्था की गहन और तीक्ष्ण आलोचना करने वाली कहानी है। मन्नू भंडारी ने यह सिद्ध किया है कि स्त्री की वास्तविक मुक्ति केवल कानूनी अधिकारों या शिक्षा से संभव नहीं है, बल्कि उसे भावनात्मक शोषण, सामाजिक दोहरे मानदंडों और पितृसत्तात्मक मानसिकता को पहचानकर उनका प्रतिरोध भी करना होगा। इस दृष्टि से 'स्त्री सुबोधिनी' हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री-चेतना की एक प्रतिनिधि और अत्यंत प्रासंगिक कहानी है। ऐसे ही रानी माँ का चबूतरा, तीन निगाहों की एक तस्वीर, सयानी बुआ, घुटन आदि जैसी कहानियाँ स्त्री-मुक्ति का मात्र शोर नहीं मचातीं, बल्कि स्त्री के मौन संघर्ष, उसके आत्मसम्मान और उसकी मानवीय गरिमा को अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मन्नू भण्डारी ने हिन्दी कहानी को ऐसी स्त्री-दृष्टि प्रदान की जिसमें नारी न तो देवी है और न ही केवल पीड़िता,वह एक जीवंत मनुष्य है, जिसकी अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, संघर्ष और निर्णय हैं। उनकी स्त्री न तो केवल परंपरागत आदर्शों की प्रतीक है और न ही विद्रोह के लिए विद्रोह करती है, वह एक संवेदनशील, विवेकशील और आत्मसम्मान से युक्त व्यक्तित्व है, जो अपने अस्तित्व, अधिकार और मानवीय गरिमा की खोज करती है। उनकी कहानियों में स्त्री के अकेलेपन, दांपत्य संबंधों की जटिलता, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पीढ़ियों के संघर्ष और आत्मनिर्णय के प्रश्न अत्यंत यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित हुए हैं। इस प्रकार मन्नू भंडारी ने हिंदी कहानी को केवल नई संवेदना ही नहीं दी, बल्कि स्त्री-विमर्श को भी एक मानवीय, संतुलित और वैचारिक आधार प्रदान किया। इसलिए उनकी कहानियाँ आज भी भारतीय समाज में स्त्री-अस्मिता, समानता और मानवीय संबंधों की पुनर्व्याख्या के लिए अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती हैं। इस प्रकार मन्नू भण्डारी की कहानियाँ केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री-जीवन के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक उपलब्धि भी हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. मनू भंडारी, यही सच है, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण-1977, पृष्ठ- 131.
2. भंडारी मन्नू, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, अकेली किताबघर प्रकाशन-2023, पृष्ठ- 7.
3. भंडारी मन्नू, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, अकेली किताबघर प्रकाशन-2019, पृष्ठ-28.
4. भंडारी मन्नू, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, अकेली किताबघर प्रकाशन-2019, पृष्ठ-28.
5. भंडारी मन्नू, मैं हार गई कहानी संग्रह, राधाकृष्ण प्रकाशन-2018, पृष्ठ-158.